Theory of Socialization

Freuds theory of Socialization
फ्रायड के समाजीकरण का सिद्धान्त

प्रसिद्ध मनोविश्लेषणवादी विद्वान सिगमण्ड फ्रायड ने समाजीकरण के सिद्धान्त की व्याख्या करते हुये कहा है कि मानव मस्तिष्क तीन तत्वों से मिलकर बनता है। Id, Ego तथा Super Ego।

Eid मानव मस्तिष्क का अचेतन एवं तर्कहीन भाग है। यह काम वासनाओं एवं अतृप्त (जिसकी मूरव पूरी नहीं हुई हो) इच्छाओं का भंडार है। Freud ने इसे उबलते हुये इच्छाओं (उद्वेगों) का कड़ाह बताया है। इसे उचित अनुचित, अच्छे बुरे से कोई मतलब नहीं होता। यह केवल अपनी इच्छाओं को सन्तुष्ट करना चाहता है। इसका वास्तविकता से कोई सम्बन्ध नहीं होता।

Ego मानव मस्तिष्क का चेतन एवं संगठित भाग है। यह तर्क बुद्धि और विवेक से सम्बन्धित होता है। यह विभिन्न इच्छाओं तथा जीव की परिस्थितियों के बीच सामंजस्य स्थापित करता है।

Scanned with CamScanner

यह उचित अनुचित की जाँच कर के इड को
केवल उचित व्यवहार करने की अनुमति देता है

Super Igo मस्तिष्क का नैतिक भाग है
यह समाजिक मान्यताओं, नियमों एवं रीति
रिवाजों को प्रस्तुत करता है। फ्रायड के अनुसार
Super Igo माता पिता की तरह Igo को आ
देता है आलोचना करता है तथा उसका मार्ग
प्रदर्शन करता है। यह Igo की अपेक्षा Id को
अच्छी तरह जानता है। अतः यह सदैव
संतरी की भाँति पहरा देता रहता है N
अवांछनीय विचार चेतन मस्तिष्क में सम
आये। Freud के Super Igo को ही
Durkheim ने सामूहिक प्रतिनिधान तथा
Mead ने "मुझे (Me) कहा है। यही समाज
करण का आधार है।

उपर्युक्त विश्लेषण से स्पष्ट
कि Id भाग पूर्णतः पाशविकता है जबकि
सुपर Igo पूर्णतः नैतिकता का प्रतीक है।
अर्थात दोनों एक दूसरे के विरोधी हैं
अतः इन दोनों के बीच ताल मेल या
सामंजस्य होना आवश्यक है। इगो दोनों
के बीच सामंजस्य स्थापित करता है
~~होना जरूरी है।~~ करता है। Freud के
अनुसार जब Igo के कमजोर पर Id, Sup
Igo की [illegible]

नैतिकता एवं आदर्शों को अपनाने लगता है तो इसी प्रक्रिया को समाजीकरण कहते हैं। इस प्रकार समाजीकरण मूलतः क्रिया और समाजिक सम्बंधों के अन्तर्गत Id, Ego और Super Ego के बीच Ego द्वारा सामंजस्य और संतुलन स्थापित करने की प्रक्रिया फलस्वरूप समाजीकरण का विकास होता है।

—x—

Scanned with CamScanner